بسم الله الرحمن الرحيم

हज़रत मुहीउद्दीन अल ख़लीफ़तुल्लाह मुनीर

अहमद अज़ीम (अ स)

27 September 2019
(27 Muharram 1441 AH)

अनुवादक : फातिमा जास्मिन सलीम
EMAIL:fjasmine14@gmail.com

जुम्मा खुतुबा

विषय:-

“अल -हुजरत: ग़ीबत (भाग-3)”

अपने सभी चेलों सहित सभी नए चेलों, (और दुनिया भर के सभी मुसलमानों) को शांति का अभिवादन करने के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल्लाह (अ त ब अ) ने तशहुद ,तौज, सूरह अल फातिहा पढ़ा और फिर उन्होंने अपना उपदेश दिया : अल -हुजरत: ग़ीबत (भाग 3)

अल्लाह की कृपा से, मैं अपने शुक्रवार के उपदेश में "ग़ीबत" (चुगली) के विषय के तीसरे भाग को जारी रख रहा हूँ, दूसरों के दोषों की तलाश, जासूसी, दूसरों पर शक करना और उन पर झूठा आरोप लगाना, उन पर दोष लगाना आदि। इस प्रकार, यह उपदेश जारी है ...

कई बार, अपने निर्दोष भाइयों या बहनों के साथ पाखंडी संबंध रखकर, आप पाखंडी बन जाते हैं। और जब कहीं ढोंगी पैदा होते है, तब, वहाँ और कहीं भी कई स्थानों / स्थितियों में ढोंगियों के विकसित होने की संभावनाएं हैं।

जब कोई इस पाखंडीपन को अपनाने की आदत बना लेता है, तो यह "ग़ीबत" है जो उस पाखंडीपन का आदी बनने में मदद करने का एक महान तत्व बन जाता है। एक पाखण्ड का आशय उस व्यक्ति से है, जो किसी के पीछे बात करने का आदी है, लेकिन उस व्यक्ति के सामने, वह पूर्ण विपरीत कहता है, और इस प्रकार, वह उस व्यक्ति को यह आभास दिलाता है कि वह उसके पक्ष में बात कर रहा था [जबकी ऐसा बिल्कुल भी नहीं होता है]। उसके सामने, पाखंडी बहुत सारी बातें कहता है, जो उसके वास्तविक दृष्टिकोण से बहुत अलग होता है और वह वास्तव में क्या सोच रहा था। यह पाखंडीपन है। तथा जब आप दूसरों के प्रति बहानेबाज़ी वाला व्यवहार करते हैं, तो ध्यान रखें, क्योंकि यह पाखंडीपन थोड़ा-थोड़ा करके आपके विश्वास में भी अपना रास्ता बना लेगा। और यह तब होता है, जब आप जमात के अमीर साहब, या नायब अमीर साहब, या सदर के साथ, कैद(the Qa'id), जमात के अधिकारियों के साथ, एक पाखंडी संबंध बनाए रखना शुरू करते है और इस प्रकार "ग़ीबत" जो व्यक्तिगत रूप से था, इस बार संगठनात्मक स्तर पर एक सामूहिक "ग़ीबत" बन गया था। और जब आप निज़ाम-ए-जमात (जमात का प्रशासन) के खिलाफ बात करते हैं, ध्यान रखें, ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर, यह एक और भी बड़ा पाप बन जाता है, तो आप [पाखंडी और उसके पाखंडी स्वभाव के बारे में बोलते हैं] उन लोगों के खिलाफ जो अल्लाह का काम करते हैं, ऐसी बुरी बातें प्रचारित करते हो, दूसरे लोगों को उनसे घृणा करने के लिए और उनके साथ उनकी सहकारिता को जाने देने के लिए उकसाते हो।

कभी-कभी जब आप अधिकारियों [अल्लाह का कार्य करने वाले] कि चुगली करते हैं, तब जो लोग आपकी बात सुनते हैं, वे घृणा को विकसित करते हैं, और यहाँ तक कि यह भी कह सकते हैं: " यदि क्या यह धर्म [इस्लाम] है, तो हमारे लिए यह सर्वोत्तम होगा कि हम इससे दूर हट जाएँ, इससे हम निवर्त हो जाएँ। " यह बिलकुल वही हैं, जो वास्तव में हुआ था, जब मुझे निज़ाम-ए-जमात अहमदिया से निकाल दिया गया; मॉरीशस के जमात अहमदिया के प्रतिनिधि - मंडल ऐसे द्वीप में गए, रीयूनियन द्वीप,

मैयट(Mayotte), सेशेल्स(Seychelles), रोड्रिग्स (Rodrigues) आदि, जैसे कि वर्ष 2001 के बाद से उन्होंने और "ग़ीबत" करना शुरू किया, और सभी प्रकार के बड़े झूठ बोले गए और मुझ पर सभी प्रकार के गलत आरोप लगाए गए, यह कहते हुए कि मैं ड्रग्स (गाँजा, अफीम नामक पदार्थ) लेता हूँ, कि मैं दवायें लेता हूँ और उन दवाओं के प्रभाव के तहत मैं कहता हूँ कि मुझे इल्हामें प्राप्त होती है। इसके विपरीत, अगर यह वास्तव में सच था, तो उन्हें यह जानने के लिए आगे बढ़ना चाहिए था कि मैं किस तरह की दवाइयाँ ले रहा था, जिससे मुझे दिव्य इल्हाम मिलती है और उन्हें ऐसे इल्हमों को प्राप्त करने के लिए, ऐसी दवाइयाँ लेने का प्रयास करना चाहिए! लेकिन उन्होंने क्या किया? उन्होंने मेरे द्वारा प्राप्त किए गए इल्हमों को शैतानी इल्हाम का नाम - पत्र दे दिया, अल्लाह न करे - नौज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिक।

जब उन्होंने इस तरह का अभिनय किया, तो उन्होंने द्वीपों में रहने वाले लोगों को इस्लाम और अहमदियत की शिक्षा से भटका दिया। उन्होंने सोचा, कि वे इन लोगों को मुझसे घृणा करवाएंगे और वे मुझे छोड़ देंगें, लेकिन ये लोग इस्लाम और अहमदियत के असली अभ्यास से निवर्त हो गए। उन्होंने सोचा कि वे एक महान कार्य कर रहें है और यह कि लोग उनके झूठ पर विश्वास करेंगे। इसके विपरीत, वे खुद उन लोगों के सामने बहुत अपमानित हुए क्योंकि जो बाद में आये थे वे मुझे बहुत अच्छी तरह से जानते थे और कैसे मैंने पूरे कई वर्ष उनके साथ द्वीपों पर कड़ी मेहनत कि हैं , और वे जानते थे कि मैं किस तरह का व्यक्ति था और उनमें से कई ने यह भी कहा: “यदि धर्म - प्रचारक यह कह रहें हैं कि शेख मुनीर अज़ीम जैसा व्यक्ति जमात से निकाल दिया गया है, तो फिर ऐसे जमात के अंदर रहने का क्या फायदा हैं? हमने इस जमात को उनके द्वारा ही जाना हैं।” इसके अलावा, कुछ ऐसे भी हैं जो एक द्वीप पर गए और एक बड़े परिवार को घोषित किया, जिसने मेरे माध्यम से बैअत ली थी और जो ईमानदार [उस समय जमात अहमदिया में] थे और जिसने जमात के लिए बहुत कुर्बानी दी थी; ताकि, वे उनकी अच्छी पुस्तकों के अंदर जाने जाएँ आदि, उनमें से एक को मॉरीशस के न्याय की अदालत में एक न्यायाधीश के रूप में, जबकि एक और को मॉरीशस के एक महान वकील के रूप में पेश किया गया। उन्होंने अपनी मूर्खता में क्या नहीं किया !!! उन्होंने खुद को छोटा करके इस तरह के स्तर पर पहुँचा दिया, कि उस द्वीप के लोग उनके लिए बुरी बातें कर रहे हैं, जैसे कि बुरी चीजों के लिए उन्हें कोस रहें हो और उनके प्रतिबद्ध और जो उन्होंने कहा, उस के बारे में बातें करते हैं। उनके सभी बुरे प्रयासों के बावजूद, जमात उल सहिह अल इस्लाम उन द्वीपों में बहुत प्रगति कर रहा है! अल्हम्दुलिल्लाह सुम्मा अल्हम्दुलिल्लाह।

[जब इन बुरे - दिमाग वाले लोगों ने मेरे लिए समस्याएं पैदा कीं और मेरे मान को बर्बाद करने की कोशिश की] ये लोग [अर्थात द्वीपों पर] जमात अहमदिया के लिए सभी रुचि और उत्साह खो बैठे, जिसे मैंने 1990 से 2000 तक उन द्वीपों पर स्थापित किया था।

[एक कथन जो अतीत में बयान हुआ था, और भविष्य के घटनाओं के लिए एक चेतावनी भी हैं - अल्लाह कि जमात - के लिए भी] तो, यह घृणित है कि ऐसे कैसे पाखंडियों ने किसी व्यक्ति पर हमला किया, जो अल्लाह का कार्य कर रहा है और अन्य पदाधिकारी जो जमात के लिए काम कर रहे हैं उन

पर भी हमला करते हैं। और एक व्यक्ति को देखना चाहिए कि यह सब घृणा, और ईर्ष्या के प्रज्वलन से शुरू होता है और उसके बाद "ग़ीबत" (चुगली) शुरू होती है।

इसलिए, "मुहब्बत" (प्यार) और "ग़ीबत" (चुगली करना) एक साथ नहीं हो सकते हैं। प्यार और स्नेह का चुगली से कोई संबंध नहीं है। ऐसे कई तरीके हैं, जिनसे हम चुगली करने से बच सकते हैं। इसका एक सकारात्मक तरीका यह है कि आप दूसरों से प्यार का रिश्ता स्थापित करें और उन लोगों के प्यार को अर्जित करने का भी प्रयास करना चाहिए, जो दिन-रात अल्लाह का काम करते हैं (अल्लाह के जमात के लिए / दिव्य घोषणापत्र) और उन लोगों के लिए प्यार और सम्मान का बंधन स्थापित करें, जो जमात में ईमानदारी और तक्वा के साथ प्रशासन करते हैं (अल्लाह से डर, धर्मपरायणता, धार्मिकता)।

आपको यह विचार करने की आवश्यकता है: “हम स्वतंत्र हैं और अपने व्यक्तिगत कार्य करने में सक्षम हैं, जबकि, जमात कि जिम्मेदारी के वाहक मज़हब के कार्य कर रहे हैं और यदि हम उनके साथ अच्छे संबंध रखते हैं, तो यह अल्लाह की खुशी हासिल करने का हमारा एक रास्ता होगा। यह वास्तव में, अल्लाह के लिए (खुशी) है कि हम उनके साथ अच्छे संबंध रखेंगे।”

यदि लोग इन पंक्तियों के साथ सोचते हैं, तो वे जानबूझकर जमात के प्रभारी लोगों के साथ सम्मान का संबंध स्थापित करेंगे, भले ही, वे जिम्मेदारी के वाहक उनसे छोटी उम्र के हों; और इसलिए, वे उनके साथ प्यार का मजबूत बंधन बनाने का प्रयास जाली नक़ल करके करेंगे [अल्लाह की खातिर भ्रातृसदृश या भगिनीवत प्यार]। यहाँ तक कि अगर आपके पास स्वाभाविक रूप से यह मुहब्बत नहीं है, तो आपको अपने अंदर इसे विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। कभी-कभी सम्मान मुहब्बत में बदल जाता हैं। और कभी-कभी मुहब्बत आदर/ सम्मान में बदल जाता है। यह विषय स्वाभाविक रूप से संपूरक है। मैं प्राकृतिक प्रेम जो सौंदर्य की अभिव्यक्ति के बाद पैदा होता हैं, उसकी बात नहीं कर रहा हूँ, नहीं। मैं बात कर रहा हूँ ऐसे प्यार के बारे में जिसे निश्चित सुंदरता के माध्यम से हासिल किया जाता है, यानी मुहब्बत जो प्रकट हुआ क्योंकि आपके स्नेह का वस्तु [चाहे व्यक्ति हो या धर्म के कार्य] मुहब्बत के अन्य वस्तुओं के साथ उसका गहरा संबंध है। अगर आपको किसी व्यक्ति के लिए प्यार है, तो आपको उस व्यक्ति से जुड़ी चीजों से भी प्यार होगा, अगर ऐसी चीज़ों से वह व्यक्ति प्यार करता है, तो आप भी उन चीज़ों से प्यार करेंगे। आप इस तथ्य के बावजूद उनसे मुहब्बत करेंगें कि आप उनके लिए एक स्वाभाविक प्रेम नहीं रखते है, लेकिन उन्हें प्यार करेंगे, मगर आप इस प्रेम को केवल इसलिए विकसित करते हैं कि आप जिस व्यक्ति से प्रेम करते हैं, वह इन चीजों से प्रेम करता है। [हुज़ूर (अ त ब अ) ने लैला-मजनू के उदाहरण का हवाला दिया जो एक महाकाव्य प्रेम कहानी है जहाँ लैला के प्रति अपने प्रेम के कारण मजनू ने लैला के कुत्ते के लिए भी प्रेम विकसित किया!] और यह एक सच्चाई है * यानि इस तरह का प्यार]। इसमें कोई शक नहीं, कि जब प्यार होता है, तो इस हद तक पागलपन के स्तर तक बढ़ जाता है, कि आप उन सभी चीज़ों से प्यार करेंगे, जो उन से जुड़ीं होती हैं। और इसमें, यह किसी के लिए संभव नहीं है अन्यथा। यह उनके नियंत्रण से बाहर है।

इसलिए, जब मैं "मुहब्बत" के बारे में बता रहा हूँ, मैं आपको कोई पाखंडीपन नहीं सिखा रहा हूँ। मैं आपको एक गहरी सच्चाई बता रहा हूँ। मैं आप से यह भी कह रहा हूँ कि प्रेम का प्रभाव आपके सम्बन्धो पर भी पड़ता है। इसलिए मैंने कई बार सहाबा (पवित्र पैगंबर (स अ व स) के साथी) का उदाहरण आपके सामने रखा है। वह मुहब्बत जो सहाबा रखते थे, वास्तव में वो निराला था। आज भी दुनिया में कई ऐसे महान प्रेम होने का दावा करते हैं, लेकिन सहाबा का प्रेम एक बहुत ही बड़ा कुदरती, बड़े स्तर पर था। मुहब्बत उनकी आँखों में था, उनके चेहरे पर, उनके शरीर के हर अंग में था। उनके शरीर का प्रत्येक भाग उस प्रेम की गवाही देगा। इसीलिए शुरुआत में, जब मैंने यात्रा करके और मेरे शिष्यों / साथियों (सहाबा) से मिला, खासकर द्वीपों और अफ्रीका के देशों में, उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और चूमा। मैं इसे लेकर बहुत शर्मीला हुआ करता था। उन्होंने सुंदर प्रेम और स्नेह को प्रदर्शित किया। उस समय, मैं इस स्नेह के प्रदर्शन से व्याकुल हुआ करता था। मैंने स्नेह को ठीक से नहीं समझा था, जो इन लोगों ने मुझे दिखाया, और मुझे भी आश्चर्य हुआ: "क्या यह शिर्क नहीं है?" लेकिन, इस सम्मान, प्यार और स्नेह को उनके चेहरों पर देखकर, मैं चुप रहा।

इस विषय पर दुआ (प्रार्थना) करने के बाद, अल्लाह (स व त) ने मुझे समझाया की वह प्यार जो उन्होंने नबी करीम (स अ व स) के लिए रखा है, हज़रत मसीहे मौउद (अ स) के लिए, इस्लाम की शिक्षाओं के लिए, उनका प्रेम इतना महान है कि वे इस खुशी को प्रदर्शित करते हैं, उस सम्मान के कारण जो उन्हें अपने समय में अल्लाह के एक दूत के आगमन से मिला है। जैसा की दूसरों के लिए, इस तथ्य के बावजूद कि अल्लाह ने उन्हें ये ईश्वरीय उपकार भी दिया है, लेकिन उन्होंने इससे अपनी पीठ मोड़ ली। जैसा कि उनके लिए, जिन्होंने इस सच्चाई को पहचाना हैं, वे परीक्षणों से गुजरने के भार के बावजूद खुशी महसूस करते हैं; वह उस समय के पवित्र पैगंबर (स अ व स) के सहाबा या वादा किए गए मसीह (अ.स.) के समय के उन सहाबा की तरह सौभाग्यशाली महसूस करते हैं ।

आज आपके बीच कोई ऐसा व्यक्ति है, जिसे अल्लाह ने भेजा है और अल्लाह उसके साथ बात करता है और वह अल्लाह कि शिक्षाओं और नबी करीम हज़रत मुहम्मद (स अ व स) के कार्यों को पुनर्जीवित करने के लिए आए है। वही शिक्षा जो अल्लाह (स व त) ने उनके द्वारा (स अ व स) सभी मानव जाति को उनकि तरफ लाने के लिए भेजा था - अद्वितीय ईश्वर।

आज मेरे अनुयायियों को भी खुशी महसूस हो रही है कि उन करोड़ों लोगों में से जो इस दुनिया में रहते हैं, उन्हें दिव्य रहस्योद्घाटन प्राप्त करने (गवाह बनने) का सम्मान मिला है, और कैसे दिव्य रहस्योद्घाटन सर्वश्रेष्ठ हैं [अल्लाह के चुनाव पर], अल्लाह कैसे उसके संदेश बरसाता हैं [दिव्य संदेश]। - [और जब अल्लाह उन्हें निर्देश / संदेश पैगम्बर के माध्यम से देता है, वे इसे आशीर्वाद के रूप में लेते हैं, वे भाग्यशाली महसूस करते हैं, वे रोते नहीं और बुरा नहीं मानते कि संदेश सीधे उन पर इंगित किए गए हैं - चाहे सकारात्मक या नकारात्मक (उनके सुधार के लिए)। वे इसे आशीर्वाद के रूप में लेते हैं और वे आज्ञा करते हैं]।

इसलिए, जब मैंने अल्लाह के इस संदेश को अच्छी तरह से समझ लिया है, तो अब मैं व्याकुल नहीं होता हूँ, जब मेरे शिष्य मेरे हाथ को मजबूती से पकड़ते हैं और वहाँ दूसरे अन्य लोग हैं, जो मेरे हाथ को चूमते हैं और यह सब एक तरीका है, जिसके माध्यम से मेरे शिष्य अपने खलीफातुल्लाह के लिए प्यार दिखाते हैं। उनके प्यार में ईमानदारी, जो वे इस युग के अल्लाह के खलीफा के लिए प्रदर्शित करते हैं उसमे पाई गई हैं, इसलिए, इस स्थिति में, मेरे लिए उनका अपमान करना उचित नहीं है। अल्हम्दुलिल्लाह।

आशा हैं, अल्लाह तआला हमेशा आपको अपने ख़लीफ़ा - ख़लीफ़तुल्लाह के प्रति ईमानदार बनाये रखे - बिना किसी पाखंडीपन के, बिना किसी दिखावे / डींग के। आमीन। इंशा-अल्लाह, मैं अगले सप्ताह अपने शुक्रवार उपदेश के दूसरे भाग को जारी रखूंगा।

[समाप्त करने से पहले, हुज़ूर (अ त ब अ) ने जमात से हमारी बहन के लिए प्रार्थना करने कि अपील की हैं, रजिया साहिबा, और हमारे भाई के.पी. शमसुद्दीन साहिब, और एक और बहन, जो बीमार हैं, सभी केरल से हैं / केरल के बॉर्डर से]।